ACTIVE R.E.M.E.D.Y LTD

# ऐक्टिव रेमेडी लि.

## "सक्रिय उपचार" (सीमित)

## संयुक्त राज्य में पंजीकृत कम्पनी नं. 5474724

जलवायु परिवर्तन अथवा भूमण्डलीय उष्णत्व अब वैश्विक कार्यसूची की एक प्रमुख समस्या बन गया है। दुनिया भर में स्पष्ट हो चुका है कि इन समस्याओं की बहुत दिनों से उपेक्षा हुई है, अतः अब यह परमावश्यक हो गया है कि इस दिशा में शीघ्र प्रभावशाली एवं समष्टिगत कार्यवाही की जाए। पहले ही अनेक प्रस्ताव किए जा चुके हैं, परन्तु अब निश्चित रूप में ज़रूरत है संयुक्त रूप में वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय तथा दूरगामी पर्यावरण–परक सहजनीय विकास हेतु काम करने की।

खाद्यान्न के उपज सम्बंधी क्षमता से लेकर जैव विविधता के क्षेत्र तक धरती पर जलवायु हमारे जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करता है। आकस्मिक झंझावातों से लेकर अत्यधिक मौनसून आदि तक जलवायु परिवर्तन के कारण घटित होने वाली आपदाएं और खतरे दृष्टिगत हो रहे हैं। 1980 से इन समस्याओं के बारे सरकारों को सूचित कर रहे पर्यावरण–विद वैज्ञानिकों द्वारा चेतावनी देती जाती रही है कि भूमण्डलीय उष्णत्व के कारण पर्वतों की बर्फ पिघल जाएगी, जिसके परिणामस्वरूप बर्फीली झीलों के फटने और भू–स्खलन के निचले इलाकों में बहने वाले पानी के समय और मात्रा में व्यवधान पड़ेगा। वर्तमान में यही स्थिति बनी हुई है। ऐसी स्थिति में ताज़ा जल की पूर्ति में मात्रा तथा गुणवत्ता सम्बन्धी अनेक समस्याऐं पैदा होती हैं, जिस का असर सारी दुनिया पर पड़ता है, क्योंकि 4000 फीट के नीचे का सब इलाका निम्न भूमि कहलाता है। घरती का जलवायु और ताज़ा जल–चक्र अन्योन्य आश्रित होते हैं।

दूरगामी सहजनीय पर्यावरणीय विकास के सन्दर्भ में धरती पर ताज़ा जल प्रणाली का प्रश्न एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मुद्दा है क्योंकि जाति, संस्कृति तथा आर्थिक स्तर की धारणा से न जोड़कर ताज़ा जल समस्त जीवों के लिए एक मौलिक आवश्यकता है। पर्वत वैश्विक जल–चक्र का एक अनिवार्य अंग है तथा धरती की समस्त बड़ी नदियों का स्त्रोत भी। उन्हें धरती के जलस्तंभ कहा जाता है, अतः धरती के लिए ताज़ा जल की आपूर्ति हेतु वे मूल स्त्रोत हैं। वे बहुत महत्वपूर्ण हैं तथा धरती की जैव विविधता तथा पर्यावरणीय प्रणाली की रक्षा और संरक्षण हेतु अनिवार्य हैं।

1992 में रीओडी जनेरू में संयुक्त राष्ट्र ने एक पृथ्वी शिखर सम्मेलन किया था। उसके अनुसार :

"धरती पर ताज़ा जल की आपूर्ति हेतु पर्वत मूल स्त्रोत है। बर्फ, झीलों, आर्द्र क्षेत्रों तथा जलाशयों के रूप में ताज़ा जल का महत्वपूर्ण भंडारण बना रहता है। कालान्तर में यह नदी नालों की

शकल में बह निकलता है। यदि यह विलम्बित जल–प्रवाह न हो तो अनेकों नदी नाले सूखे रह जाऐं। यह बहुमूल्य जल–भंडारण धरती पर समग्र जीवन हेतु बड़ा महत्वपूर्ण है। धरती की सभी नदियां पर्वतों से निकलती हैं और समुद्र की ओर जाती हैं और धरती के समस्त जीवों का हर प्रकार से संरक्षण पोषण करती हैं। *(सं. रा. कार्यसूची 21)*

"अब अधिकांश तौर पर माना जाने लगा है कि पर्वत एक नाज़ुक पर्यावरणीय प्रणाली है जो कि ताज़ा जल के भंडार के स्त्रोत के रूप में वैश्विक स्तर पर अत्यन्त महत्वपूर्ण है। धरती के लगभग एक चौथाई भू–भाग पर फैले हुए ये पर्वत संसार की 12 प्रतिशत जनसंख्या के लिए सीधे तौर पर जीवन का आधार हैं तथा आधे से अधिक धरतीवासियों के लिए आवश्यक वस्तुएं और सेवाएं प्रदान करते हैं।" *(सं. रा.सा.परि. 29 सितम्बर 2005)*

धरती के पर्वतीय प्रदेश अभूतपूर्व पर्यावरणीय ह्रास के दौर से गुज़र रहे हैं। कारण ? वनों की निर्मम और अन्धाधुंध कटाई। उंचे पर्वतों पर इस विनाशकारी कटाई के परिणामस्वरूप जीवन–चक्र ही असंतुलित हो गया है जो धरती के समस्त प्राणियों के लिए ख़तरे की बात है। भू–मण्डलीय ताज़ा जल तथा उसके शीतकरण–चक्र उंचे पर्वतों पर स्थित प्राकृतिक वनों पर निर्भर होते हैं। पहाड़ी इलाकों में पौधों की सघनता वर्षा को जन्म देती है जो कि उंचे इलाकों में बर्फ का रूप धारण कर लेती है। पर्वतों पर पड़ी बर्फ ही मुख्यतः धरती के जलवायु को नियंत्रित रखती है। पृथ्वी की शीतकारक प्रणाली में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। पर्वतीय इलाकों में 60 से 75 प्रतिशत तक के कटान के कारण बर्फ की मात्रा में बहुत कमी हुई है। फलतः भूमण्डलीय उष्णत्व की समस्या बहुत गहरा गई है। बर्फ के न रहते पहाड़ गर्म हो रहे हैं, हिम खंड सिकुड़ रहे हैं, नदियां सूख रही हैं तथा इन से जुड़ी अनेक समस्याएं उभर रही हैं।

पहाड़ों पर होने वाली वर्षा स्वभाविक तौर पर धरती की भूमिगत सरणियों, झीलों तथा नदियों में वृक्षों आदि की जड़ों द्वारा आकृष्ट होकर प्रवेश कर जाती हैं ; निचले इलाकों में यही जल स्तर तथा चश्मों आदि का रूप लेती हैं। परन्तु अब इन विशाल वनों के कटान के कारण ये बहुमूल्य जल संसाधन लुप्त होते जा रहे हैं तथा पूर्ववर्ती स्वस्थ चश्में और कूऐं सूख रहे हैं। वनों के अभाव में पर्वतीय ढलानों को क्षरण से बचाने का कोई साधन नहीं है। पत्थरों और गाद से भरी नीचे की ओर बहने वाली नदियां बहुत विनाशकारी सिद्ध हो रही हैं। कहीं–कहीं अत्याधिक बाढ़ तो कहीं बिल्कुल सूखा है। इन से जुड़ी समस्याएं बढ़ रही हैं तथा यदि उनका समाधान न हुआ तो स्थिति और भी बिगड़ जाएगी। अनेक सरकारी शोधकर्ताओं के अनुसार उपरोक्त इलाकों का संरक्षण भूमण्डलीय जल–चक्र के पक्ष में बड़ा ही ज़रूरी है। एतदर्थ एक महत्वपूर्ण एवं सशक्त समाधान पृथ्वी के पर्वतीय भागों पर पुनः तथा त्वरित पौधारोपण की प्रक्रिया है। इस दिशा में यह भी ज़रूरी है कि बचे–खुचे वनों का सुचारू संरक्षण हो तथा जहां तक संभव हो उन की प्राकृतिक जैव–विविधता को बहाल किया जाए।

हां, वर्तमान में पर्यावरण की दयनीय दशा को देखते हुए यह काम बड़ा जटिल दिख रहा है। यह इसलिए भी कठिन है क्योंकि पूर्ववर्ती वन कम हो चुके हैं तथा उनकी मिट्टी की परत क्षीण हो चुकी है। अन्देशा है कि जिस स्तर और जितने समय में यह कार्य सम्पन्न होना चाहिए वह न हो पाए। अपितु, प्रकृति की क्षमता अपार है तथा यदि इसे उपयुक्त अवसर एवं सहायता मिले तो पुनरूद्धार सम्भव भी है। परिस्थिति की नज़ाकत तथा भविष्य में होने वाली हानि को दृष्टि में रखते हुए उक्त कार्य

करना ज़रूरी हो गया है। इसमें भागीदारी होगी सरकारों की, वैज्ञानिकों की व तृणमूल सामाजिक समूहों की। पहाड़ों में रहने वाले लोगों तथा निचले इलाकों में रहने वालों की, जिन की आजाविका और अन्य आवश्यकताऐं पर्वतों के स्वास्थ्य पर निर्भर हैं, मिलजुल कर प्रयत्न करना होगा। अतः कार्य–विधि भी इन दोनों सामाजिक समूहों की परम्पराओं और ज़रूरतों के अनुरूप ही होनी चाहिए। ऐसी कार्य–विधि के अभाव में वनों के पुनः पौधारोपण का विशाल कार्य प्रभावी रूप में सम्भव न हो पाएगा।

हमें विश्वास है कि अगले तीस वर्ष में धरती के 25 प्रतिशत पर्वतीय प्रदेश पुनः वृक्षों से ढके जा सकते हैं। इस से प्राकृतिक प्रणालियां पुनः संतुलित होंगी तथा हज़ारों वर्ष तक धरती पर जीवन प्रफुल्लित रहेगा। इसी विश्वास के अंतर्गत हमने रेमेडी योजना का श्रीगणेश किया है।

वर्तमान में समस्त हिमालयी क्षेत्र तथा पूर्वकाल में समस्त विश्व में पुराने तौर तरीकों द्वारा पर्यावरण के संरक्षण की समृद्ध परम्परा रही है। भिन्न–भिन्न वर्गों के पौधों के पारम्परिक समाजों द्वारा सरंक्षण की प्रक्रिया तो युगों पुरानी है। उन्हें विश्वास था कि जीवित रहने के हित में यह परमावश्यक था। वनों के किन्हीं भागों को पवित्र वन–क्षेत्र अथवा मंदिर–वन घोषित करना वन संरक्षण की एक विधि थी। वन संरक्षण के इस आदर्श को हम आज भी अपना सकते हैं, ताकि धरती पर प्राकृतिक पर्यावरणीय स्थिति बहाल हो और जीवन सुरक्षित बने।

पवित्र वन–कुंजों की परम्परा प्राचीन है और किसी समय में आम थी। सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक मान्यताओं से जुड़े ये वन–कुंज स्थानीय लोगों द्वारा संरक्षित होते हैं। इनमें समृद्ध जीव विविधिता वर्तमान रहती है जो कि इसके संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमारे पुरखा यह जानते थे कि जिन प्राकृतिक संसाधनों पर वे निर्भर थे, उन्हें बाकी पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित रखना चाहिए। पवित्र वन–कुंज सामाजिक पर्यावरणीय प्रबन्धन का उदाहरण हैं। यह एक सामाजिक संस्था है जो स्थानीय लोगों की भागीदारी द्वारा जैविक श्रोतों का प्रबन्धन करती है। ये पवित्र वन–मंदिर, बीमार तथा नष्ट प्रायः पौधों और प्राणियों की मानों अंतिम शरण–स्थली बन जाते हैं। ग्रामीण जनता तथा आधुनिक औषधि विज्ञान के लिए औषधीय पौधों का भंडार बनते हैं तथा इन में विद्यमान रहती हैं वे जंगली किस्में जो उपजित किस्मों को सुंस्कृत बना सकती है। ये पवित्र वन–कुंज कुछ लोगों के लिए जल पूर्ति का श्रोत भी रहते हैं। इनमें छप्पड़, नदियां, नाले होते हैं, इनमें उगी शाक आदि हरीतिमा की पर्त वर्षा का जल अपने में समा लेती है जोकि सूखे के समय प्रयोग में आता है। वृक्षों तथा औषधीय पौधों का संमिश्रण धरती की परत को स्थायित्व प्रदान करता है, उपरी परत को क्षरण से बचाता है तथा सूखे जलवायु में सिंचाई हेतु जल का साधन बनता है।

पवित्र वन–कुंज हमें बार–बार याद दिलाते हैं कि मानवीय संस्कृति तथा जैव विविधता एक साथ पनपे हैं और इस सम्बन्ध को प्रोत्साहित कर के भविष्य को सहजनीय विकास को जो कि सामाजिक और पर्यावरण की दृष्टि से उपयोगी हो, हम सुचारू रूप दे सकते हैं।

वैज्ञानिक एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण से पवित्र वन–कुंजों को समझते हुए नष्ट–प्रायः भू–दृश्यों के पुनर्वास हेतु नीति निर्धारण उचित होगा ताकि जैव विविधता का पुर्ण उदार हो तथा स्थानीय जनता का जीवन समृद्ध हो सके। इस प्रकार स्थानीय लोगों को निश्चय ही अधिक प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध रहेंगे तथा भू–संरक्षण के महत्व को भी अधिक जान सकेंगे, ताकि उनकी अपनी आजीविका सुरक्षित बने और भावी पीढ़ियों की भी पश्चिमीय संरक्षण के वैज्ञानिक आदर्शों जैसे कि पार्क तथा

शरण—स्थल आदि बनाना, की तुलना में ये जन साधारण द्वारा प्रतिबंधित वन—कुंजों की विधि अधिक कारगर रहेगी। यह इसलिए कि ये वन—कुंज समाज से पूर्णतः जुड़े होते हैं। अतः वे समाजों की सांस्कृतिक अस्मिता के प्रतीक होते हैं। यह सादा परन्तु सशक्त विधान प्रमाणित करता है कि जैव विविधता तथा मानवीय स्वस्थता का सम्बन्ध कितना गहरा है।

सौभाग्यवश अब अनेक पर्यावरणविदों, सामाजिक समूहों तथा सरकारी और ग़ैर सरकारी संस्थाओं को यह आभास हो गया है कि विकास, आधुनिकता और प्रगति का यह अर्थ नहीं है कि परम्परा से मुंह मोड़ लें बल्कि आवश्यक है कि पारम्परिक ज्ञान को आधुनिकता के साथ अवश्यमेव सामंजस्य होना चाहिए। वर्तमान में बचे वन—कुंजों के रखरखाव तथा पुर्ण उदार हेतु सुचारू प्रबन्धन ज़रूरी है।

आधुनिकीकरण की लालसा बड़ी आकर्षक होती है। परन्तु इसके साथ जो पर्यावरणीय विनाश घटित होते हैं वे किसी दूरगामी सहजनीय भविष्य की ओर नहीं ले जाते। अतः इस भयावह वर्तमान में एक स्वस्थ भविष्य हेतु अच्छा होगा यदि हम अधिक पारम्परिक विधियों की ओर ध्यान दें।

हम प्रस्तुत करते हैं कि नए पावन वन—कुंज स्थापित किए जाएं तथा आयुर्वेदिक औषधीय पौध योजनाओं के अंतर्गत वर्तमान वन—कुंजों को सुरक्षित किया जाए। यह भी जरूरी है कि ऐसा स्थानीय औषधीय पौधों के उपयोग द्वारा सम्पन्न हो जैसे कि वन आमला, देवदार, बण्हा, तुलसी, पीपल, कैंथ, अखरोट, नीम, बांस तथा अन्य स्थानीय जड़ी—बूटियां आदि, इन में से अनेक तो भू—संरक्षण हेतु भी बहुत उपयोगी हैं। वन—कुंजों की योजना तैयार करते समय के तरीके तथा पारम्परिक ज्ञान के आधार पर इन पौधों के गुणों को पहचाना जा सकता है। दो—दो किलोमीटर के फ़ासले पर ऐसे अनेक वन—कुंज विशाल भू—भाग पर स्थापित कर के तथा उन्हें हरित गालियारों द्वारा आपस में जोड़ कर, एक ऐसी रचना रचित हो सकती है जो समस्त हिमालय क्षेत्र तथा पृथ्वी के अन्य पर्वतीय इलाकों में स्वस्थ, स्थानीय वन सम्पदा के सृजन में सक्षम हो सकती है।

हरित गलियारों द्वारा इन वन—कुंजों को परस्पर जोड़ा जा सकता है और जैव विविधता का प्रसार हो सकता है। वन—कुंजों तथा समाज समूहों की बीच वाली जमीन पर औषधीय पौधारोपण तथा घरेलू उद्योगों हेतु वृक्षारोपण सम्भव हो सकता है। ऐसा होने से समाज के साधन बढ़ेंगे तथा यह शिक्षाप्रद भी रहेगा। इससे आशु तथा दूरगामी लाभ भी होंगे तथा सहजनीय विकास के हित में प्रेरणादायक भी। इन हरित गलियारों का प्रबन्ध स्थानीय पाठशालाओं तथा स्वास्थ्य केन्द्रों से जुड़ा हो ताकि उक्त संसाधन समस्त समाज के लिए लाभदायक सिद्ध हों।

उपरोक्त व्यवस्था आधुनिक तथा पारम्परिक का संमिश्रण होने के कारण शीघ्र प्रचारित होने योग्य रहेगी, जिसके मार्ग में कोई ऐसी बाधाएं न आयेगी जो प्रायः अनेक अन्य प्रयासों की व्यवस्थाओं में आती हैं। स्थानीय पर्वतीय लोगों द्वारा मिल कर काम करने तथा संसार भर की सहायता के फलस्वरूप त्वरित पर्वतीय पुर्ण उदार होना निश्चय ही संभव है। 'रेमेडी' संस्था एक ऐसा उपाय प्रस्तुत कर रही है जिसके द्वारा विश्व के देश अपना विशिष्ट पर्यावरणीय प्रणालियों के पुनर्जन्म हेतु प्रभावी पग उठा सकते हैं तथा उन के भावी विनाश एवं अनिवार्य विघटन की रोकथाम कर सकते हैं। विविध पर्यावरणीय तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं हेतु यह व्यवस्था प्रयोग में लाई जा सकती है। दूरगामी सहजनीय विकास के उन लक्ष्यों की पूर्ति के वास्ते जो पृथ्वी शिखर सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र और

सरकारों द्वारा निर्दिष्ट हुए थे, यह एक मार्ग है। यह सोचने की बजाय कि इससे क्या लाभ होगा अथवा इस पर कितना व्यय होगा हमें वास्तव में यह सोचना चाहिए कि यह हमें सुरक्षा प्रदान करेगा तथा कम से कम इससे कुछ न कुछ सकारात्मक फ़र्क़ अवश्य पड़ेगा।

रीओडी जनेरू में हुए पृथ्वी शिखर सम्मेलन 1992 में हुए अनुबन्धों के आनुसार :

## fu;e % 1

"मनुष्य सहजनीय विकास के सरोकारों के केन्द्र बिन्दु हैं। उन्हें प्रकृति की समरसता के साथ स्वस्थ एवं सार्थक जीवन का अधिकार है।"

## fu;e % 15

"पर्यावरण के सरंक्षण हेतु राज्यों को अपनी क्षमता के अनुरूप सावधानी युक्त दृष्टिकोण अपनाना होगा। जहां–जहां अपूर्णीय क्षति का भय हो वहां पर्यावरणीय ह्रास को रोकने के लिए मूल्य–परक पग उठाने में इस कारण झिझक न होनी चाहिए कि वैज्ञानिक तौर पर आप परिणामों के बारे आश्वस्त नहीं हैं। विश्व भर में अनेक ऐसे पर्यावरणीय समूह तथा सरकारी संगठन हैं जो कि पर्यावरण सन्बन्धी स्थानीय समस्याओं से जूझ रहे हैं और महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। अपितु यदि हम अपने दायरे से बाहिर की प्रमुख समस्याओं को दृष्टिविगत करेंगे तो प्रभावी ढंग से सफल न हो पाएंगे।"

## viu ckj

हम एक पारिवारिक समूह हैं। हम गत कुछ वर्षों से हिमालय क्षेत्र में घूमते हुए वैज्ञानिकों से शोध सामग्री दस्तावेज आदि एकत्रित कर उस का अध्ययन करते रहे हैं। इसी के आधार पर हम उपरोक्त निष्कर्षों पर पहुंचे हैं। उपरोक्त निष्कर्षों की शुरूआत तथा उसके कार्यान्वयन में सहायता करने के उद्देश्य से हम भारत आए हैं, ताकि स्थानीय लोगों के साथ मिल–जुल कर नए वन–कुंज और हरित गलियारे स्थापित कर सकें। ये हमारे प्रस्तावों के जीते–जागते उदाहरण होंगे तथा विश्व–व्यापी वन पुर्न–पौधारोपण हेतु आदर्श भी। इस प्रकार हम संसार भर के अनेक सामाजिक समूहों के साथ काम करने की आशा रखते हैं।

हमने एक अ–लाभपरक, अव्यवसायिक सीमित कंपनी स्थापित की है जो ऐच्छिक रेमेडी (सीमित) 5474724 के नाम से यू.के. में पंजीकृत है। अपने कार्य में सफल होने के लिए हमें अन्य जागरूक समूहों तथा व्यक्तियों में से आर्थिक एवं अन्य सहायता की अपेक्षा है। आप से प्रार्थना है कि आप हमें विज्ञापित करें, नेट सम्बन्ध प्रदान करें और अपने वेबसाइट से जोड़ें। इस अभियान की सफलता हेतु आप के प्रति आभार।

संपर्क सूत्र :

Email : enquiries@activeremedy.org.uk

Website : www.activeremedy.org.uk